हिंदी विभाग, भाषा संकाय, महादेव देसाई समाजसेवा संकुल
गूजरात विद्यापीठ : अहमदाबाद - 380009

हिंदी विभाग

एमं.ए. हिंदी **(M. A., HINDI)**

कुल चार सेमेस्टर
का
पाठ्यक्रम

जून, 2023 से लागू

हिंदी विभाग के एम. ए. (हिंदी) पाठ्यक्रम का
क्रेडिटवार विवरण

<u>पाठ्यक्रम</u>	<u>अवधि</u>	<u>सीटें(इनटेक)</u>
एम.ए. (हिंदी)	2 वर्ष (4 सेमेस्टर)	57

<u>पाठ्यक्रम का ढाँचा</u>

<u>एम.ए. (हिंदी)</u>	क्रेडिट	अध्ययन **(Contact Hours)**	अंक
<u>प्रथम सेमेस्टर</u>			
CC-HIN- 101. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य – **I**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 102. आधुनिक हिंदी काव्य – **I**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 103. आधुनिक गद्य साहित्य – **I**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 104. भाषा विज्ञान	**4**	**48**	**100**
CC-HIN- 105. राजभाषा प्रशिक्षण	**4**	**48**	**100**
	20	**240**	**500**
<u>द्वितीय सेमेस्टर</u>			
CC- HIN- 201. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य – **II**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 202. आधुनिक हिंदी काव्य – **II**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 203. आधुनिक गद्य साहित्य – **II**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 204. हिंदी भाषा	**4**	**48**	**100**
CC-HIN- 205. हिंदी उपन्यास	**4**	**48**	**100**
	20	**240**	**500**
<u>तृतीय सेमेस्टर</u>			
CC-HIN- 301. काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन – **I**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 302. हिंदी साहित्य का इतिहास – **I**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 303. प्रयोजनमूलक हिंदी – **I**	**4**	**48**	**100**
CC-HIN- 304. भारतीय साहित्य – **I**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN-305. अनुवाद विज्ञान	**4**	**48**	**100**
	20	**240**	**500**

चतुर्थ सेमेस्टर

CC- HIN- 401. काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन **– II**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 402. हिंदी साहित्य का इतिहास **– II**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 403. प्रयोजनमूलक हिंदी **– II**	**4**	**48**	**100**
CC- HIN- 404. भारतीय साहित्य **– II**	**4**	**48**	**100**
CC-HIN- 405. नाटक और रंगमंच	**4**	**48**	**100**
	20	**240**	**500**
कुल बीस प्रश्नपत्र कुल क्रेडिट	**80**	960	2000

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-1

CC- **HIN. -101.** प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-1

उद्देश्य :

इस प्रश्नपत्र के माध्यम छात्रों को प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी तथा डिंगल, पिंगल, ब्रज और अवधी भाषा में लिखित हिंदी काव्य से साक्षात्कार कराया जाएगा ताकि वे हिंदी साहित्य की इस अमूल्य धरोहर से परिचित हो सकें तथा हिंदी साहित्य की इस अमूल्य विरासत को समझ सकें जिससे उनका ज्ञानवर्धन तो होगा ही; साथ ही, वे अपनी साहित्यगत जड़ों से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ेंगे।

इकाई – 1 **अमीर खुसरो** - अमीर खुसरो का हिन्दी के प्रारंभिक विकास में योगदान
अमीर खुसरो का हिन्दवी साहित्य
अमीर खुसरो की रचनाओं का आस्वादन- **1.** बहुत कठिन है डगर----- **2.** बाबुल गीत-----

इकाई – 2 **चन्दबरदायी** - पृथ्वीराज रासो का महाकाव्यत्व
पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता
पृथ्वीराज रासो - समय तथा ससन्दर्भ व्याख्या

इकाई – 3 **कबीर** - कबीर - काव्य की प्रासंगिकता
कबीर - काव्य में व्यक्त रहस्यवाद एवं भाषा शैली
कबीर एवं महात्मा गांधी का समाज सुधारक रूप
कबीर - काव्य का आस्वादन : 1. गुरुदेव कौ अंग- 20 साखियाँ। 2. सुमिरन कौ अंग- 20 साखियाँ। 3.विरह कौ अंग- 10 साखियाँ

इकाई – 4 **जायसी** - प्रेममार्गी काव्य परंपरा और 'पद्मावत'
'पद्मावत' महाकाव्य की प्रतीकात्मकता
ससन्दर्भ व्याख्या हेतु 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग'खण्ड का अध्ययन

इकाई – 5 **मीराबाई** - मीराबाई के काव्य में भक्ति-भावना
मीराबाई का काव्य एवं नारी अस्मिता
ससन्दर्भ व्याख्या हेतु मीरा के 20 पदों का अध्ययन।

<u>आधार ग्रंथ</u>

1.1 अमीर खुसरो, संपादक - सुदर्शन चोपडा, प्रथम सरस्वती सीरीज, संस्करण : 1988, प्रकाशक : हिन्दी पोकेट बुक्स (प्राइवेट लिमिटेड), शाहदरा दिल्ली

1.2 कबीर ग्रंथावली, संपादक : डॉ. श्यामसुन्दर दास, विविध अंगों से चयनित साठ साखियाँ

1.3 जायसी : पद्मावत, संपादक- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

1.4 तुलसीदास : रामचरित मानस, गीता प्रेस, गोरखपुर

1.5 रसखान : रसखान ग्रंथावली- देशराज सिंह 'भाटी', नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2004

1.6 जाय़सी : पद्मावत, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

1.7 मीरा पदावली – परशुराम चतुर्वेदी

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. भारत की महान विभूति अमीर खुसरो, व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. परमानंद पांचाल, हिन्दी बुक सेन्टर, आसफ अली रोड, नई दिल्ली, संस्करण 2001

2. लौह पुरुष कबीर, डॉ. सुशीला सिन्हा

3. उलटबाँसी शैली और संत कबीर, श्री रमेशचन्द मिश्र

4. कबीर का रहस्यवाद, डॉ. रामकुमार वर्मा

5. पद्मावत : डॉ. माताप्रसाद गुप्त

6. जायसी ग्रंथावली : राजनाथ शर्मा

7. तुलसी का काव्य वैभव, डॉ. सभापति मिश्र

8. तुलसी प्रतिभा, डॉ. इन्द्रनाथ मदान

9. तुलसीदास, आचार्य चन्द्रवली पाण्डेय

10. तुलसी के काव्यादर्श, संपादकद्वय, डॉ. मालती दुबे एवं डॉ. राम गोपाल सिंह

11. रसखान का काव्य, डॉ. कृष्णचन्द्र वर्मा, नीरज बुक सेन्टर, दिल्ली, प्रथम संस्करण

12. संत समागम, डॉ. शांति सेठ, हिन्दी साहित्य अकादमी, गांधीनगर

13. मध्यकालीन हिन्दी काव्य, संपादक – डॉ. दिलीप के. मेहरा, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2010

14. मध्यकालीन हिन्दी गुजराती निर्गुण काव्य का तुलनात्मक अध्य़य़न, डॉं. पोप़टभाई आस्था प्रकाशन, कानपुर

15. कबीर साहित्य को प्रकाश, चतुर्वेदी परशुराम, भारती भंडार प्रकाशन

16. मध्यकालीन हिंदी साहित्य, डॉ. पन्नालाल, अनंत प्रकाशन दिल्ली

17. कबीर ग्रंथावली, श्यामसुंदर दास, डाय प्रकाश, जयपु

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-1

CC- HIN.-102. आधुनिक हिन्दी काव्य-1

उद्देश्य :

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं नूतन विचार सरणियाँ उसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मनुष्य उसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

इकाई - **1**	'साकेत'(नवम् सर्ग) - मैथिलीशरण गुप्त	'साकेत' नामकरण 'साकेत' का भावपक्ष 'साकेत' का कलापक्ष
इकाई - **2**	छायावादी युगीन काव्य -	प्रमुख कवि एवं प्रवृतियाँ
इकाई - **3**	'कामायनी'(चिन्ता,श्रद्धा- और लज्जा) जयशंकर प्रसाद	'कामायनी' का कथा- विन्यास 'कामायनी' की महाकाव्यात्मकता 'कामायनी' का भावपक्ष 'कामायनी' का कलापक्ष
इकाई - **4**	राम की शक्ति पूजा - सूर्यकान्त त्रिपाठी'निराला'	राम की शक्ति पूजा का नामकरण राम की शक्ति पूजा का भावपक्ष
इकाई - **5**	चुनी हुई कविताएँ : सुमित्रानंदन पन्त	परिवर्तन नौका विहार मौन निमंत्रण सोन जुही ये धरती कितना देती है

संदर्भ ग्रंथ

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तित्व और काव्य, डॉ. कमलकांत पाठक
2. साकेत : एक अध्ययन, डॉ. नगेन्द्र
3. साकेत में काव्य, संस्कृति और दर्शन, डॉ. द्वारका प्रसाद सक्सेना
4. जटाशंकर प्रसाद, नंददुलारे वाजपेयी
5. कामायनी : रचना प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में, डॉ. हरीश शर्मा
6. कामायनी की आलोचना प्रक्रिया, गिरिजा राय
7. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ, डॉ. नगेन्द्र
8. कामायनी का पुनर्मूल्यांकन, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
9. निराला की साहित्य साधना, डॉ. राम विलास शर्मा
10. महामानव निराला, शिवगोपाल मिश्र
11. निराला : काव्य नया परिपेक्ष्य, डॉ. संतोषकुमार
12. निराला नव मूल्यांकन, डॉ रामरतन भटनागर
13. कला सृजन की प्रक्रिया और निराला, डॉ. शिवकरण सिंह
14. एक व्यक्तित्व एक युग निराला, नागार्जुन
15. निराला की काव्यभाषा, डॉ. शकुन्तला शुक्ल
16. निराला और उनका तुलसीदास, डॉ. रामकुमार सिंह
17. निराला : काव्य में सांस्कृतिक चेतना, जगदीशचंद्र
18. सुमित्रानंदन पंत: व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. रामजी पांडेय
19. सुमित्रानंदन पंत का काव्य, डॉ. प्रेमलता बाफना
20. कवि सुमित्रानंदन पंत, आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी
21. आधुनिक हिंदी कवि और उनका काव्य परिचय, डॉ. जशवंतभाई पंड्या

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-1

CC- HIN. -103. आधुनिक गद्य साहित्य-1

उद्देश्य :

आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। यह मानव मन और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है। मनुष्य का राग - विराग, तर्क-वितर्क तथा चिंतन-मनन जिस रागात्मकता के साथ कौशलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यंजित होता है, वैसा अन्य साहित्यांग में संभव नहीं होता। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है कि प्रौढ़ मन मस्तिष्क की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य में ही संभव है। निबंध गद्य का प्रौढ़ शक्तिशाली प्रतिरूप, उसकी वैयक्तिक एवं स्वातंत्र्य चेतना का विश्वसनीय प्रतिनिधि है। नाटक उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है। आज मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास प्रक्रिया के साथ सहज प्रमाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

इकाई -1 हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल

1.1 भारतेन्दु का आगमन तथा हिन्दी गद्य का उद्भव तथा विकास, फोर्ट विलियम कॉलेज और हिन्दी गद्य, हिन्दी साहित्य की विभिन्न गद्य विधाएँ और उनका संक्षिप्त परिचय

1.2 उपन्यास का स्वरूप एवं व्याख्या, विकास की रूपरेखा, तत्व, प्रेमचंद और हिन्दी उपन्यास का विकास, उपन्यास के प्रकार

इकाई -2 प्रेमचंद और उनका गोदान

2.1 गोदान : एक महाकाव्यात्मक कृति, गोदान का कथ्य और शिल्प, गोदान की प्रमुख समस्याएँ, प्रमुख विशेषताएँ

2.2 गांधी विचारधारा, भारतीय कृषि जीवन, ग्रामीण और शहरी संस्कृति, भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

इकाई -3 फणीश्वरनाथ रेणु और उनका मैला आँचल

3.1 आंचलिक उपन्यास- स्वरूप एवं व्याख्या, विकास की रूपरेखा, तत्व, आंचलिक उपन्यास-लेखन में प्रवर्तनकर्ता के रूप में फणीश्वरनाथ रेणु, प्रमुख आँचलिक उपन्यासकारों में रेणु का स्थान

3.2 मैला आँचल का कथ्य एवं शिल्प, मैला आँचल की आंचलिकता, ग्रामीण चेतना, सांस्कृतिक तथा धार्मिक पृष्ठ भूमि, मैला आँचल का नायकत्व, मैला आँचल की औपन्यासिक उपलब्धियाँ

इकाई - 4 निबंध और प्रमुख निबंधकार

4.1 निबंध का अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या, आचार्य रामचंद्र शुक्ल एवं निबंध का विकास, निबंध के तत्व, निबंध के प्रकार, प्रमुख निबंधकार

4.2 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबंध - विचार प्रधान निबंध, ललित निबंध, मनोवैज्ञानिक निबंध, हास्य एवं व्यंग्यप्रधान निबंध, समीक्षात्मक निबंध, प्रस्तुत निबंध एवं उनकी विशेषताएँ

4.3 (1) मेघदूत – महावीर प्रसाद द्विवेदी
(2) क्रोध – रामचंद्र शुक्ल
(3) मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है – हजारीप्रसाद द्विवेदी
(4) गेहूँ बनाम गुलाब – रामकृष्ण बेनीपुरी
(5) अभिव्यंजनावाद – नंददुलारे बाजपेयी
(6) अंगद की नियति – विद्यानिवास मिश्र
(7) ठिठुरता हुआ गणतंत्र – हरिशंकर परसाई

इकाई - 5 चरितात्मक कृति:- पथ के साथी (महादेवी वर्मा)

5.1 महादेवी का साहित्यिक परिचय
5.2 संस्मरण विधा: स्वरूप एवं व्याख्या, उद्भव एवं विकास
5.3 महादेवी के संस्मरणों की विशेषताएँ

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद – डॉ. त्रिभुवन सिंह
2. प्रेमचंद : एक विवेचन – डॉ. इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. प्रेमचंद और उनके उपन्यास, उषा ऋषि-प्रकाशन, भारतीय ग्रंथ विवेचन, दिल्ली
4. प्रेमचंद के उपन्यासों में समकालीनता, रजनीकांत जैन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. आद्यबिम्ब और गोदान, कृष्णमुरारी मिश्र, राधाकृष्ण, नई दिल्ली
6. गोदान : नया परिबोध, त्रिलोकीनाथ खन्ना, आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

7. फणीश्वरनाथ रेणु अर्थात मृदंगिये का मर्म, संपा- भारत यायावर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास, डॉ. नगीन जैन, मा.ग्रं.वि.दिल्ली
9. हिन्दी निबंध के आधार स्तंभ- डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
10. हिन्दी निबंध के सौ वर्ष, डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय, गिरिनार प्रकाशन, महेसाणा, गुजरात
11. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और उनका साहित्य, राजेन्द्र दीक्षित, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. गद्यविन्यास और विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
13. हिन्दी निबंध, प्रभाकर माचवे
14. हिन्दी के प्रतिनिधि निबंधकार, डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
15. हिन्दी साहित्य के निबंध और निबंधकार, डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त
16. द्विवेदी युगीन निबंध साहित्य
17. ललित निबंध, डॉ. संगीता सारस्वत
18. शुक्लोत्तर निबंध में सांस्कृतिक चेतना, डॉ. बाबू लाल
19. महादेवी का संस्मरणात्मक गद्य, चरणसखी शर्मा, शोध प्रबन्ध प्रकाशन, दिल्ली
20. गद्य की सत्ता, रामस्वरूप चतुर्वेदी
21. गद्य लेखिका महादेवी वर्मा, योगराज धानी, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली
22. महादेवी मूल्यांकन, डॉ. परमानंद श्रीवास्तव
23. हिंदी उपन्यास एक अनंत यात्रा, रामदरश मिश्र
24. प्रेमचंद और उनका युग, रामविलाश शर्मा
25. फणीश्वर नाथ रेणु के कथा साहित्य में आंचलिक तत्व- मेदी कंचन माला
26. गोदान एक महाकाव्यात्मक उपन्यास, जितेन्द्रनाथ पाठक

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-1

CC -HIN -104. भाषा विज्ञान

उद्देश्य :

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषाविज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ट अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतर संबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतदृष्टि देता है अपितु भाषा विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

इकाई – 1 भाषा और भाषाविज्ञान

1.1 भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण

1.2 भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार

1.3 भाषा संरचना और भाषिक प्रकार्य

1.4 भाषा विज्ञान: स्वरूप और व्याप्ति

1.5 भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ - वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक

इकाई – 2 स्वन प्रक्रिया

2.1 स्वन का स्वरूप और शाखाएँ

2.2 वाग अवयव और उनके कार्य

2.3 स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण

2.4 स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन

2.5 स्वनिम विज्ञान का स्वरूप

2.6 स्वनिम की अवधारणा

2.7 स्वनिम के भेद

2.8 स्वनिमिक विश्लेषण

इकाई - 3 रूप एवं वाक्य विज्ञान

3.1 रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ,

3.2 रूपिम की अवधारणा

3.3 रूपिम के भेद

3.3.1 मुक्त-आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, सम्बन्धदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य

3.4 वाक्य के भेद

3.5 वाक्य विश्लेषण

3.6 निकटस्थ अवयव विश्लेषण

3.7 गहन संरचना और बाह्य संरचना

इकाई – 4 अर्थ विज्ञान

4.1 अर्थ की अवधारणा

4.2 शब्द और अर्थ का संबंध

4.3 अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

4.4 अर्थ परिवर्तन के कारण

4.5 पर्यायता

4.6 अनेकार्थता

4.7 विलोमता

इकाई - 5 विराम व्यवस्था

5.1 पूर्ण विराम

5.2 अल्प विराम

5.3 अर्ध विराम

5.4 अपूर्ण विराम

5.5 प्रश्न चिह्न

5.6 आश्चर्यसूचक चिह्न

5.7 निर्देशक

5.8 कोष्टक

5.9 अवतरण चिह्न

5.10 वर्णलोपी चिह्न

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताबमहल, इलाहाबाद
2. हिंदी भाषा की ध्वनि संरचना, डॉ. भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली
3. हिंदी भाषा की रूप संरचना, डॉ. भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली
4. हिंदी भाषा की वाक्य संरचना, डॉ. भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली
5. हिंदी भाषा की आर्थी संरचना, डॉ. भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली
6. आधुनिक हिंदी व्याकरण, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
7. भाषिक स्वरूप-संरचना और कार्य, डॉ. राम गोपाल सिंह, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली
8. हिंदी व्याकरण और रचना, डॉ. राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद
9. भाषा विज्ञान, डॉ. राम गोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स, गाजियाबाद
10. हिंदी वाक्य रचना पर अंग्रेजी का प्रभाव, डॉ. राम गोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स, गाजियाबाद
11. भाषा विज्ञान की रूपरेखा, डॉ. हरीश शर्मा

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-1

CC-HIN - 101. राजभाषा प्रशिक्षण

उद्देश्य :

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत की राजभाषा के रूप संवैधानिक स्वीकृति मिलने के बाद राजभाषा हिंदी का प्रशिक्षण विद्यार्थियों को देना इसलिए भी आवश्यक हो जाता है, ताकि छात्र राजभाषा हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप से परिचित हो सकें तथा इस क्षेत्र में भी भविष्य में रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें। इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थियों में कार्यालयी भाषा के संबंध में जागरूकता आएगी तथा वे प्रशासनिक भाषा के कार्यालयी स्वरूप एवं टिप्पण- आलेखन से भी परिचित होंगे जिससे उन्हें रोजगार प्राप्त करने में सरलता रहेगी।

इकाई – 1 राजभाषा हिंदी की प्रकृति

1.1 प्रशासन व्यवस्था और भाषा

1.2 भारत की बहुभाषिकता और एक संपर्क भाषा की आवश्यकता

1.3 राजभाषा(कार्यालयी हिंदी) की प्रकृति

1.4 कार्यालयी भाषा की विशेषताएँ

1.5 राजभाषा का अनु प्रयोगात्मक पक्ष -हिंदी आलेखन, टिप्पण, संक्षेपण तथा पत्राचार - पत्र, अर्धसरकारी पत्र, परिपत्र, आदेश, कार्यालय आदेश, ज्ञापन, कार्यालय ज्ञापन आदि>

इकाई – 2 राजभाषा विषयक संवैधानिक प्रावधान

2.1 राजभाषा विषयक संवैधानिक व्यवस्था

2.2 संविधान के भाग-5, 6 और 17 - अनुच्छेद 343 से 351 तक

2.3 अष्टम अनुसूची

2.4 राष्ट्रपति के आदेश - 1952,1955,1960

2.5 राजभाषा अधिनियम - 1963 (यथासंशोधित-1967)

2.6 राजभाषा संकल्प

2.7 राजभाषा नियम, 1976

इकाई - 3 राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन

3.1 वार्षिक कार्यक्रम, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

3.2 त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट

3.3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति

3.4 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

इकाई - 4 मानकीकरण

4.1 देवनागरी हिंदी वर्तनी एवं अंकों का मानकीकरण

4.2 हिंदी संकेताक्षर और कूटपद निर्माण - हिंदी संक्षिप्ताक्षर, संकेताक्षर, कूटपद निर्माण, सिद्धांत एवं व्यवहार

इकाई – 5 प्रशासनिक शब्दावली

5.1 प्रशासनिक शब्दावली

5.2 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

5.3 प्रशासनिक शब्दावली का परिचय

5.4 वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

संदर्भ ग्रंथ

1 संक्षेपण और विस्तरण, डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली

2.आदर्शपत्र लेखन, डॉ. श्यामचंद्र कपूर, विद्या विहार, दिल्ली

3.पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ , डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दाकार, दिल्ली

4.हिन्दी कार्यालय निर्देशिका, गोपिनाथ श्रीवास्तव,सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली

5.जीवन बीमा-व्यवसाय में हिंदी का प्रयोग,सुधीर निगम ,राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली

6.कार्यालयों मे हिन्दी के प्रयोग की दिशाएँ, डॉ. उमा शुक्ल, लोक भारती, प्रकाशन, इलाहाबाद

7.कम्प्यूटर के विविध आयाम, डॉ. राम गोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, गाजियाबाद

8.हिंदी कंप्यूटिंग, डॉ.राम गोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, गाजियाबाद

8. हिंदी व्याकरण और रचना, डॉ. राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद

10. राजभाषा प्रशिक्षण, डॉ. विनयकुमार पाठक

एम.ए. (पारंगत) हिन्दी, सेमेस्टर-2

HIN. -201. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य -2

उद्देश्य :

प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य – **1** के माध्यम छात्रों को प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई तथा डिंगल, पिंगल, व्रज और अवधी भाषा में लिखित हिंदी काव्य से साक्षात्कार कराया गया ताकि वे हिंदी साहित्य की इस अमूल्य धरोहर से परिचित हो सकें तथा हिंदी साहित्य की इस अमूल्य विरासत को समझ सकें जिससे उनका ज्ञानवर्धन होने के सथ वे अपनी साहित्यगत जड़ों से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ेंगे। प्रस्तुत प्रश्नपत्र प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य – **2** में विद्यार्थियों को मध्यकाल एवं रीतिकाल के कवियों की कविताओं से परिचित करवाना मुख्य उद्देश्य है।

इकाई – 1 सूरदास - सूरदास के काव्य में भक्ति और दर्शन, सूरदास के काव्य में वात्सल्य का निरुपण, ससन्दर्भ व्याख्या हेतु सूरदास के 'भ्रमर गीत सार' से 20 (बीस) पदों का अध्ययन। 1-11, 21-29

इकाई - 2 तुलसीदास - तुलसीदास की भक्ति भावना, तुलसीदास का काव्य एवं नारी विमर्श, तुलसीदास एवं महात्मा गांधी की रामराज्य की परिकल्पना, अयोध्याकांड से 20 दोहे एवं चौपाइयाँ, ससन्दर्भ व्याख्या हेतु। दोहे-55से75

इकाई - 3 घनानन्द - कृष्ण भक्त कवि घनानन्द, घनानन्द की प्रेमाभिव्यंजना, घनानन्द की काव्य भाषा-शैली, ससन्दर्भ व्याख्या हेतु घनानन्द के 20 कवित्त।

इकाई – 4 बिहारी - बिहारी की बहुज्ञता, बिहारी का श्रृंगार वर्णन, बिहारी की भक्ति भावना, ससन्दर्भ व्याख्या हेतु बिहारी के 20 दोहे - 40 से 60

इकाई - 5 रसखान - रसखान की भक्ति भावना, रसखान - काव्य रूप एवं शैली, लससन्दर्भ व्याख्या हेतु रसखान के 20 पदों का अध्ययन। सुजान रसखान के 1 -20 (सवैया, दोहा, भक्ति)

आधार ग्रंथ

1.चंदवरदायी : पृथ्वीराज रासो, संपादक- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं डॉ. नामवर सिंह (कोई एक समय)

2. सूरदास : भ्रमरगीत सार, संपादक- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

3. मीराबाई : मीरा पदावली, संपादक- परशुराम चतुर्वेदी

4. घनानंद : घनानंद कवित्त, संपादक- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

5. बिहारी : बिहारी सतसई, ओमप्रकाश, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण- 1995

संदर्भ ग्रंथ

1. सूर साहित्य, हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. सूर विमर्श, डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
3. बिहारी मीमांसा, डॉ. राम सागर त्रिपाठी
4. बिहारी का नया मूल्यांकन, बच्चन सिंह
5. विद्यापति सूर, बिहारी का काव्य सौंदर्य, डॉ. शरद कणवरकर
6. बिहारी, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
7. तुलसी का काव्य वैभव, डॉ.सभापति मिश्र
8. तुलसी, डॉ. इन्द्रनाथ मदान
9. तुलसीदास, आचार्य चन्द्रवली पान्डेय
10. तुलसी के काव्यादर्श, संपादक,डॉ. मालती दुबे एवं डॉ. राम गोपाल सिंह
11. घनानंद : घनानंद कविता, संपादक आचार्य विश्वनाथ मिश्र
12. बिहारी रत्नाकर, जगन्नाथ दास रत्नाकर,नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष-2003, प्रथम संस्करण
13. रामचरित मानस का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. राजकुमार पान्डेय, कानपुर
14. सूरसागर, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा,
15. भक्ति काव्य का मूल्यांकन, डॉ. वेदत्त शर्मा
16. रसखान ग्रंथावली, देवराज सिंह, भाटी
17. धनंजय का साहित्यिक अवदान, हनुमंत रणशेब
18. तुलसी साहित्य में उदात्त तत्व, डॉ. विनोद कुमार मिश्र

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-2

CC - HIN. -202. आधुनिक हिन्दी काव्य -2

उद्देश्य :

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं नूतन विचार सरणियाँ उसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मनुष्य उसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

इकाई - 1	उर्वशी (तृतीय सर्ग) - रामधारी सिंह 'दिनकर'	उर्वशी का नामकरण उर्वशी का भावपक्ष उर्वशी का कलापक्ष
इकाई - 2	प्रयोगवाद -	प्रमुख कवि एवं प्रवृतियाँ
इकाई - 3	आज के लोकप्रिय कवि- अज्ञेय	नदी के द्वीप असाध्य वीणा बावरा अहेरी कितनी नावों में कितनी बार घर साम्राज्ञी का नैवेद्य दान उन्होंने घर बनाया सागर मुद्रा
इकाई - 4	नई कविता -	प्रमुख कवि एवं प्रवृतियाँ
इकाई - 5	प्रवाद पर्व : नरेश मेहता -	'प्रवाद पर्व' का नामकरण 'प्रवाद पर्व' का भावपक्ष 'प्रवाद पर्व' का कलापक्ष

संदर्भ ग्रंथ

1. दिनकर : व्यक्तित्व और कृतित्व, जगदीश प्रसाद
2. दिनकर, सावित्री सिन्हा
3. उर्वशी : समग्र अध्ययन, डॉ. दयाशंकर जोशी
4. उर्वशी : उपलब्धि और सीमा, वीरेंद्र नारायण सिंह
5. उर्वशी : विचार और विश्लेषण, वचनदेव कुमार
6. अज्ञेय : कवि और काव्य, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
7. अज्ञेय : कवि का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन, डॉ. कुलवन्त कौर
8. अज्ञेय : एक अध्ययन, डॉ. भोलाभाई पटेल
9. अज्ञेय : प्रकृति काव्य, काव्य प्रकृति- संजय कुमार
10. आधुनिक हिन्दी काव्य : उद्भव और विकास, स्नेहलता पाठक
11. नरेश मेहता- व्यक्तित्व कृतित्व
12. नरेश मेहता के खण्ड काव्य : एक अनुशीलन, कविता शर्मा
13. उत्सव पुरूष नरेश मेहता, महिमा मेहता
14. नरेश मेहता : एक एकांत शिखर, प्रमोद त्रिवेदी
15. आधुनिक हिंदी कवि और उनका काव्य परिचय, डॉ. जशवंतभाई पंड्या

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-2

CC - HIN. -203 आधुनिक गद्य साहित्य -2

आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। यह मानव मन और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है। मनुष्य का राग- विराग, तर्क-वितर्क तथा चिंतन-मनन जिस रागात्मकता के साथ कौशलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यंजित होता है, वैसा अन्य साहित्यांग में नहीं होता। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है कि प्रौढ़ मन मस्तिष्क की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य में ही संभव है। निबंध गद्य का प्रौढ़ शक्तिशाली प्रतिरूप, उसकी वैयक्तिक एवं स्वातंत्र्य चेतना का विश्वसनीय प्रतिनिधि है। नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

इकाई -1 1.1 भारतेन्दु और हिन्दी नाटक, नाटक का अर्थ स्वरूप एवं व्याख्या, प्रमुख नाटककार और उनकी नाट्य कृतियाँ।

इकाई -2 2.1 प्रसाद और उनका चन्द्रगुप्त

2.2 प्रसाद और नाटक का विकास

2.3 चन्द्रगुप्त का कथ्य एवं शिल्प

2.4 नाटक की प्रमुख विशेषताएँ

2.5 प्रसाद की नारी भावना

2.6 चन्द्रगुप्त नाटक में राष्ट्रीयता

इकाई -3 मोहन राकेश का नाटक- आधे- अधूरे

3.1 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक की पृष्ठभूमि

3.2 आधुनिक रंगमंच और हिन्दी नाटक

3.3 प्रारंभिक प्रयास, अश्क और माथुर के नाटक

3.4 मोहन राकेश के नाटक एवं नाटक में रंगचेतना

3.5 राकेश के नाटक आधे-अधूरे का कथ्य एवं शिल्प

3.6 आधे-अधूरे : एक सफल प्रतीकात्मक नाटक

3.7 सामसामयिक युग का प्रतिबिम्ब, मनोवैज्ञानिकता, रंगमंचीयता, शिल्प विधान

इकाई -4 4.1 हिन्दी कहानी के प्राचीन रूप का संक्षिप्त परिचय, आधुनिक कहानी का उद्भव एवं विकास, नयी कहानी का स्वरूप एवं व्याख्या, कहानी के तत्व, प्रमुख कहानीकार, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी और उसकी विशेषताएँ, प्रस्तुत संकलन की कहानियाँ और उनकी विशेषताएँ

4.2 (1) उसने कहा था, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, गुलेरी जी का साहित्यिक परिचय, कहानी का कथ्य एवं शिल्प, उद्देश्य

(2) तत्सत - जैनेन्द्र, जैनेन्द्र जी का साहित्यिक योगदान, कहानी का कथ्य एवं शिल्प, उद्देश्य

(3) खोयी हुई दिशाएँ- कमलेश्वर, कमलेश्वर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, कहानी का कथ्य एवं शिल्प

(4) परिन्दे - निर्मल वर्मा, कहानीकार का परिचय, कहानी का कथ्य एवं शिल्प, आधुनिक बोध, एकाकीपन की समस्या, प्रतीकात्मकता, उद्देश्य

(5) उषा प्रियंवदा - लेखिका का परिचय, कहानी का कथ्य एवं शिल्प, आधुनिकताबोध

(6) जहाँ लक्ष्मी कैद है, राजेन्द्र यादव, समकालीन कहानीकार और राजेन्द्र यादव का परिचय, कहानी का कथ्य एवं शिल्प

(7) कफन - प्रेमचंद, कहानीकार प्रेमचंद, कहानी का कथ्य एवं शिल्प, कहानी में यथार्थ बोध

इकाई -5 संदर्भ सहित व्याख्या-उपरोक्त दो नाटकों एवं सात कहानियों में से।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. नाटककार जयशंकर प्रसाद, सं. डॉ. सत्येन्द्र तनेजा
2. प्रसाद के नाटक, डॉ. सिद्धनाथ कुमार, मैकमिलन कंपनी, दिल्ली
3. प्रसाद का नाट्यशिल्प, बनवारीलाल दौडा, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली
4. मोहन राकेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सुषमापाल अग्रवाल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
5. हिन्दी नाटक, डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
6. हिन्दी कहानी, डॉ. इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. हिन्दी कहानी के सौ वर्ष, सं. वेदप्रकाश अमिताभ, मधुवन प्रकाशन, मथुरा
8. कहानी, स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
9. प्रसाद के नाटकों में नाटक की अवधारणा, देवकिशन चौहान
10. प्रसाद : नाट्य और रंगशिल्प, डॉ. गोविन्द चातक
11. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, डॉ. नेमिचंद्र जैन
12. हिंदी नाटक उद्भव और विकास, डॉ. दशरथ ओझा
13. हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश
14. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नैमिचंद्र जैन

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-2

CC - HIN. -204 हिंदी भाषा

भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्,य विकास और मानकीकरण का विवरण हिंदी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

इकाई -1	हिंदी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	- प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ, वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ-पालि, प्राकृत, शौरशैनी, मागधी, अर्थमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण
इकाई – 2	हिंदी का भौगोलिक विस्तार	- हिंदी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ, खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ
इकाई – 3	हिंदी का भाषिक स्वरूप - हिंदी	हिंदी की स्वनिम व्यवस्था - खंड्य, खंड्येतर; शब्द रचना-उपसर्ग, प्रत्यय, समास; रूपरचना-लिंग-वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में; हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप; हिंदी वाक्य रचना : पदक्रम और अन्विति।
इकाई - 4	हिंदी भाषा के विविध रूप-	सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिंदी, माध्यम भाषा, संचारभाषा, हिंदी की संवैधानिक स्थिति
इकाई - 5	देवनागरी लिपि	- देवनागरी लिपि का विकास, आक्षरिक लिपि, वैज्ञानिक लिपि, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, देवनागरी हिंदी वर्तनी एवं अंकों का मानकीकरण।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा, डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताबमहल, इलाहाबाद
2. भाषिक स्वरूप : संरचना और कार्य, डॉ. राम गोपाल सिंह, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली
3. भाषा विज्ञान, डॉ. राम गोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स, गाजियाबाद
4. हिंदी वाक्य रचना पर अंग्रेजी का प्रभाव, डॉ. राम गोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स, गाजियाबाद
5. भाषा विज्ञान डॉ.उदय़ नाराय़ण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. हिंदी भाषा, डॉ.कैलाशचंद्र भाटिय़ा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
7. आधुनिक हिंदी व्याकरण, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
8. विश्व की भाषाओं का वर्गीकरण, डॉ. राम गोपाल सिंह, विनय प्रकाशन, अहमदाबाद
9. हिंदी व्याकरण और रचना, डॉ. राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-2

CC-HIN - 205 हिन्दी उपन्यास

उद्देश्य :

इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत उपन्यास के स्वरूप, हिन्दी उपन्यास के इतिहास, हिन्दी उपन्यास की प्रमुख शैलियाँ, हिन्दी के प्रतिनिधि उपन्यासों की वस्तु एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य के अध्ययन के माध्यम से छात्रों को हिंदी उपन्यास विधा के स्वरूप एवं विकास से परिचित कराते हुए आधुनिक हिंदी उपन्यास एवं उपन्यास विधा से परिचित कराया जाएगा ताकि छात्र उपन्यास के विधागत स्वरूप एवं विषयगत वैविध्य से भलीभाँति परिचित हो सके और उनमें विधागत कौशल्य की समझ विकसित हो सके।

इकाई -1 हिंदी उपन्यास विधा

1.1 हिंदी उपन्यास का स्वरूप

1.2 हिंदी उपन्यास के तत्व

1.3 हिंदी उपन्यास के प्रकार

1.4 हिन्दी के प्रमुख उपन्यास तथा उपन्यासकार

1.5 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास की विविध धाराएँ- मनोवैज्ञानिक उपन्यास, फ्रायड और युंग, प्रयोगशील उपन्यास, आधुनिकता बोध के उपन्यास

इकाई -2 प्रेमचंद का रंगभूमि और अज्ञेय का उपन्यास अपने-अपने अजनबी

2.1 रंगभूमि का कथ्य और शिल्प तथा प्रमुख विशेषताएँ

2.2 अज्ञेय और उनका अपने-अपने अजनबी, अज्ञेय और उनके समकालीन उपन्यासकार, अपने-अपने अजनबी का प्रयोगशील उपन्यास के रूप में कथ्य और शिल्प, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, जीवन दर्शन, अस्तित्ववादी, आस्थावादी जीवन दर्शन

इकाई -3 भीष्म साहनी और उनका तमस

3.1 भीष्म साहनी और उनके समकालीन उपन्यासकार

3.2 तमस का कथ्य और शिल्प तथा प्रमुख विशेषताएँ

3.3 मार्कसवादी चिंतन और जीवन दर्शन

इकाई -4 वृंदावनलाल वर्मा का मृगनयनी और मन्नू भंडारी का उपन्यास आपका बंटी

4.1 मृगनयनी का रचना विधान और ऐतिहासिकता तथा परिवेश चित्रण

4.2 मन्नू भंडारी और आपका बंटी

4.3 महिला लेखिकाएँ और मन्नू भंडारी

4.4 आपका बंटी का रचना विधान, बंटी और बाल मनोविज्ञान

इकाई -5 जैनेन्द्र और उनका उपन्यास त्यागपत्र

4.1 मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेन्द्र और उनके समकालीन उपन्यासकार

4.2 त्यागपत्र उपन्यास का कथ्य एवं शिल्प तथा औपन्यासिक विशेषताएँ

4.3 जैनेन्द्र का जीवन दर्शन (त्यागपत्र के माध्यम से) और नियतिवाद

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. अद्यतन हिन्दी उपन्यास, डॉ. बिन्दु भट्ट, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
2. समकालीन हिन्दी उपन्यास, विवेकी राय, राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद
3. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास : विविध प्रयोग, डॉ. कुसुम शर्मा, श्याम प्रकाशन, जयपुर
4. हिन्दी उपन्यास : समकालीन विमर्श, डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नयी दिल्ली
5. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में, उमेश प्रसाद सिंह
6. हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
7. हिन्दी उपन्यास, डॉ. सुषमा धवन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष, डॉ. रामदरश मिश्र, गिरनार प्रकाशन, महेसाणा
9. भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना, राजेश्वर सक्सेना
10. हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य जीवन, डॉ. उर्मिला भटनागर
11. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास, डॉ. नगीना जैन
12. अज्ञेय के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का मनोविश्लेषण, डॉ. मफतलाल पट

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-3

CC - HIN. -301. काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन -1

भारतीय काव्यशास्त्र

उद्देश्य :

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करके रचना को उसकी समग्रता में समझने और जाँचने-परखने के लिए भारतीय और हिन्दी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है। इस प्रश्नपत्र के माध्यम से छात्रों में भारतीय काव्य शास्त्र के प्रति समझ विकसित होगी जिससे वे छंदबद्ध कविता को काव्यशास्त्रीय दृष्टि से समझ सकेंगे तथा काव्य विवेचन कर सकेंगे।

इकाई -1 भारतीय काव्यशास्त्र

1.1 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख आचार्य

1.2 हिन्दी कवि आचार्यों का काव्यशास्त्रीय चिंतन : लक्षण-काव्य परंपरा एवं कवि शिक्षा, रीतिकाल की युगीन परिस्थितियाँ, संस्कृत काव्यशास्त्र, रीतिग्रंथ, रस-नायिका भेद, अलंकार ग्रंथ

1.3 संस्कृत काव्यशास्त्र : काव्य-परिभाषा एवं लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रकार

इकाई -2 रस सिद्धांत

2.1 रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा

2.2 ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि-काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्र काव्य

2.3 औचित्य सिद्धांत : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद

इकाई -3 अलंकार सिद्धांत

3.1 अलंकार सिद्धांत : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण

3.2 रीति सिद्धांत : रीति की अवधारणा, काव्य गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ

3.3 वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद

इकाई - 4 हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

4.1 शास्त्रीय, सौन्दर्यशास्त्रीय और शैली वैज्ञानिक

4.2 ऐतिहासिक, तुलनात्मक और समाजशास्त्रीय

4.3 प्रभाववादी, व्यक्तिवादी और मनोविश्लेषणवादी

इकाई - 5 व्यावहारिक समीक्षा

5.1 गद्यांश

5.2 पद्यांश

5.3 अन्य

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत, डॉ. कृष्णदेव झारी, चौखंभा पुस्तक सीरीज, वाराणसी
2. भारतीय काव्यशास्त्र, कृष्णदेव शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा, डॉ. नगेन्द्र
4. भारतीय काव्यचिंतन, राजेश्वर दयाल सक्सेना, नीलम प्रकाशन, इलाहाबाद
5. भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन, विश्वंभरनाथ उपाध्याय, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
6. भारतीय काव्यशास्त्र : नवीन संभावनाएँ, चंद्रभान रावत, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
7. समीक्षा लोक, भगीरथ मिश्र
8. हिन्दी रीति साहित्य, डॉ. भगीरथ मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. हिन्दी आलोचना का विकास, नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी समीक्षा सिद्धांत, डॉ. ब्रह्मदत्त मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
11. भारतीय एवं पाश्चात्य समालोचना : नवआकलन, डॉ. गोपीवल्लभ नेमा
12. सिद्धांत और अध्ययन, बाबू गुलाबराय
13. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, भाग-1, डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
14. काव्यशास्त्र, डॉ. भगीरथ मिश्र
15. रस सिद्धांत, डॉ. नगेन्द्र
16. समीक्षाशास्त्र के भारतीय मानदंड, डॉ. रामसागर
17. रस मीमांसा, आचार्य रामचंद्र शुक्ल
18. भारतीय काव्यशास्त्र, डॉ. विजय पाल सिंह
19. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत, डॉ. गणपति
20. भारतीय काव्यशास्त्र, डॉ. अशोक के शाह, ‘प्रतीक’
21. काव्य दर्पण, पंडित राम दहिन मिश्र
22. वस्तुनिष्ठ काव्यशास्त्र, बालेन्दु शेखर तिवारी

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-3

CC - HIN. -302. हिन्दी साहित्य का इतिहास **-1**

(आदिकाल एवं मध्यकाल)

उद्देश्य **:**

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण परिवर्तन होता है, फलत: साहित्यिक रूपों में भी बदलाव आ जाता है। हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों से पूरा भारत प्रभावित होता रहा है, जिसकी गूँज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है। आठवीं – नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है। अत: इसके अध्ययन से छात्रों में आदिकाल एवं मध्यकाल के प्रति भाषा, भाव एवं विषय संवर्धित मेधा का विकास होगा तथा उन्हें अपने प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य विषयक जानकारी प्राप्त होगी जिसकी नींव पर आगामी साहित्य सृजित हुआ है। इससे छात्रों की साहित्यिक चेतना में अभिवृद्धि होगी।

इकाई – 1 हिंदी साहित्य का इतिहास

1.1 हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा

1.2 आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ

1.3 हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण

इकाई – 2 हिन्दी साहित्य : आदिकाल

2.1 हिंदी साहित्य के आदिकाल की पृष्ठभूमि

2.2 सिद्ध और नाथ-साहित्य, रासो-काव्य

2.3 जैन साहित्य

2.4 हिन्दी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य

2.5 साहित्यिक प्रवृत्तियाँ और काव्यधाराएँ

2.6 प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ

इकाई - 3 पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.2 सांस्कृतिक चेतना

3.3 भक्ति आंदोलन एवं विभिन्न काव्यधाराएँ तथा वैशिष्ट्य

3.4 प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान

3.5 भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ

3.6 सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व

इकाई – 4 राम और कृष्ण काव्य

4.1 राम और कृष्ण काव्य तथा काव्येतर काव्य

4.2 भक्ति इतर काव्य

4.3 प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य

4.4 भक्तिकालीन गद्य साहित्य

इकाई – 5 उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)

5.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

5.2 काव्य - सीमा और नामकरण

5.3 दरबारी संस्कृति और लक्षण-ग्रंथों की परंपरा

5.4 रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त), प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ

5.5 प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ

5.6 रीतिकालीन गद्य साहित्य

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्च रामचंद्र शुक्ल

2. हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

3. हिन्दी साहित्य की भूमिका, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

4. हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग-1-2, पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक- डॉ. नगेन्द्र

6. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त

7. आदिकालीन हिन्दी साहित्य - शोध, डॉ. हरीश

8. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, शिवकुमार शर्मा

9. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, रामनाथ शर्मा

10. हिन्दी साहित्य का इतिहासदर्शन, डॉ. आनंद नारायण शर्मा

11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त

12. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. रामसजन पाण्डेय

13. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण, विजयमोहन सिंह

14. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, द्वितीय खंड, गणपति चंद्र गुप्त

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-3

CC - HIN. -303 प्रयोजनमूलक हिंदी -1

उद्देश्य :

भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना है जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य हैं- सौदर्यपरक और प्रयोजनपरक। भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन व्यवहार से है। यह व्यक्तिपरक होकर समाज सापेक्ष सेवा माध्यम (सर्विस टूल्स) के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्व की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन कराना अत्यंत अपेक्षित है। इसके विविध आयामों से न केवल रोजगार या आजीविका की समस्या हल होगी बल्कि राजभाषा विषयक संस्कार भी दृढ़ होंगे।

इकाई – 1 प्रयोजनमूलक भाषा

1.1 प्रयुक्ति की संकल्पना

1.2 प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियाँ और प्रयोगात्मक क्षेत्र

1.3 कार्यालयी या प्रशासनिक हिंदी की प्रकृति और मुहावरा

1.4 प्रयोजनमूलक हिंदी और पारिभाषिक शब्दावली

1.5 प्रशासनिक शब्दावली

1.6 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

इकाई – 2 प्रशासनिक पत्राचार और उसके प्रकार

2.1 प्रारूपण

2.2 पत्रलेखन 2.2.1 पत्र 2.2.2 अर्धसरकारी पत्र

2.2.3 परिपत्र 2.2.4 आदेश 2.2.5 कार्यालय आदेश

2.2.6 ज्ञापन 2.2.7 कार्यालय ज्ञापन 2.2.8 पृष्ठांकन

2.3 संक्षेपण

2.4 पल्लवन

2.5 टिप्पण

इकाई – 3 हिंदी कम्प्यूटिंग

3.1 सूचना प्रौद्योगिकी और उसके उपकरण

3.2 कम्प्यूटर सुविधाएँ

3.3 कम्प्यूटर की भाषा

3.4 हिंदी कम्प्यूटिंग

3.5 कम्प्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर

3.6 इंटरनेट

3.7 सर्च इंजन 3.8 वायरस 3.9 हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाएँ

इकाई – 4 हिंदी पत्रकारिता

4.1 हिंदी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास

4.2 समाचार लेखन कला

4.3 सम्पादकीय लेखन

4.4 पृष्ठ सज्जा

4.5 शीर्षक की संरचना

इकाई – 5 साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता और प्रैस प्रबंधन

5.1 साक्षात्कार, प्रक्रिया, तकनीक, प्रकार

5.2 पत्रकार – वार्ता

5.3 प्रेस प्रबंधन

5.4 व्यावहारिक प्रूफ शोधन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1.प्रयोगात्मक और प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. रामप्रकाश गुप्त तथा अन्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

2.प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. कमलेश्वर भट्ट तथा अन्य, शारदा प्रकाशन, दिल्ली

3.व्यवहारिक हिंदी, डॉ. सुनील जोगी आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली

4. विधा अनुवाद : विविध आयाम, डॉ. कृष्ण गोपाल अग्रवाल, संजय प्रकाशन, दिल्ली

5.जनसंचार माध्यम और अनुवाद, डॉ.राम गोपाल सिंह, विनय प्रकाशन, अहमदाबाद

6.प्रयोजनमूलक भाषा और अनुवाद, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद

7.प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद

8.पत्रकारिता प्रशिक्षण, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद

9.कम्प्यूटर के विविध आयाम, डॉ. राम गोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, गाजियाबाद

10. हिंदी कंप्यूटिंग, डॉ.रामगोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स एंडडिस्ट्रीब्यूटर्स, गाजियाबाद

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-3

CC - HIN. -304 भारतीय साहित्य -1

उद्देश्य :

भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्थान अन्य प्रान्तीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है, इसीलिए हिन्दी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूप रचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिन्दी के स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है तभी उनके ज्ञान क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण का विकास हो सकेगा।

इकाई - 1 भारतीय साहित्य की पूर्व पीठिका

1.1 भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्थान

1.2 भारतीय साहित्य का स्वरूप

1.2.1 भारतीय साहित्य का आरम्भिक समीक्षात्मक स्वरूप

1.2.2 आधुनिक समीक्षा का स्वरूप

1.2.3 भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ

1.2.4 हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ

1.2.5 आदिकाल 1.2.6 मध्यकाल 1.2.7 आधुनिककाल

इकाई - 2 भारतीय साहित्य की विकास यात्रा

2.1 भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब

2.2 भारतीय साहित्य की विषयवस्तु (आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिककाल)

2.3 भारतीयता एवं साहित्य का समाजशास्त्र

2.3.1 भारतीयता के समाजशास्त्र का आरम्भिक रूप

2.3.2 समाजशास्त्र और साहित्य का सम्बन्ध

2.3.3 समाजशास्त्रीय अध्ययन के सिद्धांत

2.3.4 मार्क्सवादी विचारधारा

2.3.5 गांधीवादी विचारधारा 2.3.6 साहित्य के प्रति दृष्टि

इकाई - 3 भारतीय साहित्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति

3.1 हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

3.1.1 मूल्य विवेचन

3.1.2 भारतीय मूल्य और जीवन मूल्य - आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिककाल

इकाई - 4 हिंदी एवं बंगला साहित्य की विकास यात्रा

4.1 हिन्दी साहित्य का इतिहास

4.1.1 पूर्व भूमिका 4.1.2 आदिकाल 4.1.3 भक्तिकाल

4.1.4 रीतिकाल तथा आधुनिककाल का साहित्य

4.1.5 साहित्यकार एवं प्रमुख कृतियाँ

4.2 बंगला साहित्य का इतिहास 4.2.1 पूर्व भूमिका

4.2.2 प्रारंभिक काल एवं विकास 4.2.3 आधुनिक काल

इकाई - 5 हिन्दी और बंगला साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

5.1 तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप

5.2 हिन्दी और बंगला साहित्य का सामान्य परिचय

5.3 हिन्दी और बंगला भाषाओं के आदिकाल से आधुनिक काल तक के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, डॉ. रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन,
2. आज का भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी, दिल्ली
3. भारतीयता की पहचान, केशवचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका
5. हिन्दी साहित्य (तीनों खंड), भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग
6. भारतीय भाषाएँ, डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
7. तुलनात्मक साहित्य, डॉ. धीरूभाई परीख, ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात वि.वि.
8. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, डॉ. इन्द्रनाथ चौधुरी
9. तुलनात्मक साहित्य, डॉ. नगेन्द्र
10. तुलनात्मक साहित्य, सिद्धांत और समीक्षा, सं. डॉ. महावीर सिंह चौहान
11. तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ, सं. डॉ. राजूरकर एवं राजमल वोरा
12. बंगला साहित्य का इतिहास : कल्याणजी दास गुप्ता, भारतीय ग्रंथ निकेतन
13. समकालीन भारतीय साहित्य (द्वैमासिक पत्रिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
14. भारतीय साहित्य का सांस्कृतिक पक्ष, रोहिताश्व
15. भारतीय साहित्य आशा और आस्था, डॉ. आरशु
16. तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, इंन्द्रनाथ चौधरी
17. समकालीन भारतीय साहित्य में आधुनिक युग बोध, संपादक, डॉ. सुशील धर्माणी, डॉ. रेणु हिंगोरानी

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-3

CC-HIN- 305. अनुवाद विज्ञान

उद्देश्य :

भारत जैसे बहुभाषाभाषी देश में मात्र अनुवाद ही एक ऐसा सेतु है जिसके माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं के ज्ञान तक पहुँच बनाई जा सकती है। देशी-विदेशी भाषाओं के ज्ञान भंडार की जानकारी के लिए अनुवाद की अनिवार्यता असंदिग्ध है। तुलनात्मक साहित्य, भाषाविज्ञान तथा विदेशी भाषा शिक्षण आदि में भी अनुवाद एक कारगर उपकरण के रूप में प्राचीनकाल से एक मान्य विधा के रूप में स्वीकृत रहा है। जनसंचार माध्यमों तथा दूसरे आधुनिक विषय क्षेत्रों में भी इसकी उपयोगिता सर्वविदित है। अत: अनुवाद का शिक्षण-प्रशिक्षण और पठन-पाठन वर्तमान समय की महती आवश्यकता एवं अनिवार्यता भी है। अनुवाद के सिद्धांत पक्ष के साथ-साथ उसके व्यावहारिक पक्ष की समझ भी विद्यार्थियों को देनी जरूरी है ताकि छात्र अनुवाद की समस्याओं के व्यावहारिक पहलुओं से भलीभाँति अवगत हों तथा प्रशिक्षित, कुशल और अनुभवी अनुवादक के रूप में वे आगे अपनी मेधा को विकसित कर सकें।

इकाई - 1 अनुवाद का स्वरूप

1.1 अनुवाद : परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएँ

1.2 अनुवाद का स्वरूप

1.3 अनुवाद - कला, विज्ञान या शिल्प

1.4 अनुवाद की इकाई - शब्द, पदबंध, पाठ

1.5 अनुवाद के प्रकार - कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी मीडिया, विज्ञापन

1.6 अनुवादक के गुण

इकाई – 2 अनुवाद की प्रक्रिया

2.1 विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन

2.2 पाठ पठन, पाठ विश्लेषण, भाषांतरण, समायोजन, मूल से तुलना, पुनरीक्षण

2.3 अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरण

2.3.1 स्रोतभाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया

2.3.2 स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थांतरण की प्रक्रिया

2.3.3 अनूदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थसंप्रेषण की प्रक्रिया

2.4 अनुवाद प्रक्रिया की प्रकृति

इकाई – 3 अनुवाद और समतुल्यता का सिद्धांत

3.1 अनुवाद और समतुल्यता का सिद्धांत

3.2 समतुल्यता के विविध स्तर

3.2.1 सांस्कृतिक रीति – नीति, आचार-विचार आदि

इकाई – 4 अनुवाद की समस्याएँ

4.1 सृजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ

4.2 कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ

4.3 वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

4.4 विधि साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

इकाई – 5 अनुवाद के उपकरण तथा अनुवाद पुनरीक्षण और मूल्यांकन

5.1 अनुवाद के उपकरण – कोश, थिसॉरस, पारिभाषिक शब्दावली, कम्प्यूटर इंबिल्ट सॉफ्टवेयर

5.2 अनुवाद पुनरीक्षण

5.3 अनुवाद संपादन

5.4 अनुवाद मूल्यांकन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. अनुवाद विज्ञान : स्वरूप और समस्याएँ, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
2. अनुवाद के विविध परिप्रेक्ष्य, डॉ.राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद
3. अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली
4. अनुवाद विज्ञान, डॉ. राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद
5. अनुवाद प्रक्रिया, रीतारानी पालीवाल
6. अनुवाद कला : सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ.कैलाश चन्द्र भाटिया
7. भारतीय भाषाओं से हिंदी अनुवाद की समस्या, डॉ.भोलानाथ तिवारी
8. अनुवाद का भाषिक सिद्धान्त, जे. सी. केटफोर्ड, अनुवादक.-डॉ.रविशंकर दीक्षित
9. अनुवाद चिंतन और अनुदृष्टि, डॉ.सु. नागलक्ष्मी जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
10. अनुवाद की समस्याएँ, डॉ. जी. <u>गोपीनाथन</u>, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. अनुवाद सिद्धान्त की रुपरेखा, डॉ. सुरेश कुमार वाणी प्रकाशन, दिल्ली
12. अनुवाद के विविध आयाम, डॉ पूरनचंद्र टंडन तथा अन्य, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
13. अनुवाद : संवेदना और सरोकार, डॉ.सुरेश कुमार_सिंहल, संजय प्रकाशन, दिल्ली
14. हिंदी कंप्यूटिंग, डॉ. राम गोपाल सिंह, आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, गाजियाबाद

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-4

CC - HIN. - 401 काव्यशास्त्र एवं साहित्यलोचन -2

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है तथा वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करके रचना को उसकी समग्रता में समझने और जाँचने-परखने के लिए भारतीय और हिन्दी के साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

इकाई -1 1.1 प्लेटो : प्लेटो पूर्व युग की देन, प्लेटो के काव्य विषयक सिद्धांत, काव्य सत्य का मूल एवं स्वरूप, प्रेरणा का सिद्धांत, अनुकरण का सिद्धांत, प्लेटो की देन

1.2 अरस्तू : अनुकरण का सिद्धांत, त्रासदी का विवेचन, परिभाषा, स्वरूप एवं तत्व, विरेचन-सिद्धांत, ट्रेजेडी का प्रयोजन, कोमेडी

1.3 लोंजाइनस : काव्य विषयक धारणाएँ, उदात्त की परिभाषा(अवधारणा)

इकाई -2 2.1 ड्राइडन : काव्य सिद्धांत : आलोचना की प्रमुख विशेषताएँ, आलोचना संबंधी विचार

2.2 वड्र्सवर्थ : युग और परिस्थितियाँ, काव्य भाषा का सिद्धांत

2.3 कॉलरिज : कल्पना सिद्धांत, काव्य संबंधी विचार, ललित कल्पना

इकाई -3 3.1 मैथ्यू आर्नल्ड : आर्नल्ड का युग एवं परिस्थितियाँ, काव्य विषयक विचार, आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य (महत्व)

3.2 टी.एस.इलियट : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीक्षा का सिद्धांत, संवेदनशीलता का असाहचर्य

3.3 आई.ए.रिचड्र्स : काव्य विषयक सिद्धांत, रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, आलोचना संबंधी विचार (व्यावहारिक आलोचना)

इकाई -4 सिद्धांत और वाद

4.1 आभिजात्यवाद, अभिव्यंजनावाद

4.2 स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद

4.3 मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद

इकाई -5 5.1 संरचनावाद, शैली विज्ञान

5.2 विखंडनवाद

5.3 उत्तर आधुनिकतावाद

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास, डॉ. तारकनाथ बाली, मैकमिलन प्रकाशन, मुंबई
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, डॉ. कृष्णदेव शर्मा
4. पाश्चात्य साहित्य चिंतन, निर्मला जैन, कुसुम बांटिया, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
5. समीक्षा के नये प्रतिमान, दिवाकर, भारतीय ग्रंथ निकेतन
6. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श, सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. उत्तर आधुनिकता और संरचनावाद, सुधीश चौधरी, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली
8. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ.बच्चन सिंह, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंदीगढ़
9. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, डॉ. मैथिलीप्रसाद भारद्वाज
10. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र, सिद्धांत और सम्प्रदाय, डॉ. कृष्णलाल जोशी
11. पश्चिमी आलोचनाशास्त्र, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
12. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त
13. काव्यशास्त्र : भारतीय एवं पाश्चात्य, कन्हैयालाल अवस्थी
14. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य शास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, सहदेव चौधरी
15. मार्कसवादी साहित्य, चिंतन इतिहास तथा सिंद्धांत, शिवकुमार मिश्र
16. टी.एस. इलियट, कृष्णदेव शर्मा

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-4

CC - HIN - 402. हिन्दी साहित्य का इतिहास -2

(आधुनिक काल)

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण जनमानस में परिवर्तन होता है, फलतः साहित्यिक रूपों में भी बदलाव आ जाता है। हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों से पूरा भारत प्रभावित होता रहा है, जिसकी गूँज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है। आठवीं – नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से किया जा सकता है। अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है।

इकाई - 1 आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् 1857 ई. की राजक्रांति और पुनर्जागरण, आधुनिक हिन्दी कविता-सामान्य परिचय, पूर्व प्रवर्तित काव्य परंपरा, भारतेन्दुयुगीन प्रमुख कवि एवं प्रवृत्तियाँ

इकाई - 2 महावीरप्रसाद द्विवेदी युगीन कवि एवं प्रवृत्तियाँ, स्वच्छन्दतावादी (छायावादी काव्य) परंपरा, नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि, प्रगतिवादी (समाजपरक यथार्थवादी) काव्य परंपरा, प्रगतिशील लेखक संघ, मार्क्सवाद का सामान्य परिचय, प्रगतिवादी प्रमुख कवि एवं प्रवृत्तियाँ, नई कविता, नवगीत, समकालीन कविता

इकाई - 3 हिन्दी उपन्यास : स्वरूप एवं विकास, हिन्दी कहानी का विकास

इकाई - 4 हिन्दी नाटक : स्वरूप एवं विकास

इकाई – 5 निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, आलोचना,रिपोर्ताज

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
1. हिन्दी साहित्य का प्रवृत्यात्मक इतिहास, डॉ. शिवमूर्ति शर्मा
2. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, शिवकुमार शर्मा
3. आधुनिक हिन्दी कहानी, गंगा प्रसाद विमल
4. कहानी : नयी कहानी, नामवर सिंह
5. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का शिल्प विकास, डॉ. राधेश्याम कौशिक
6. हिन्दी कथा साहित्य, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
7. हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास, डॉ. कृष्णा नाग
8. हिन्दी उपन्यास : पहचान और परख, डॉ.इन्द्रनाथ मदान

9. हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास, डॉ. प्रतापनारायण टंडन
10. हिन्दी साहित्य का विवेचनपरक इतिहास, मोहन अवस्थी
11. हिन्दी साहित्य नव विमर्श, डॉ. जशवंतभाई पंडया
12. आधुनिक हिन्दी साहित्य, बच्चन सिंह
13. हिन्दी साहित्य : विविध आयाम, डॉ. जशवंतभाई पंडया
14. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण, विजयमोहन सिंह
15. हिंदी साहित्य का इतिहास, संपादक डॉ. रामसजन पांड्य

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-4

CC - HIN. -403 प्रयोजनमूलक हिंदी-2

आज मीडिया एक सशक्त माध्यम है। मीडिया हेतु प्रशिक्षित, कुशल एवं अनुभवी कर्मी तैयार करने हेतु आज मीडिया विषयक प्रशिक्षण की महती आवश्यकता है। मीडिया की भाषा में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थी मीडिया की भाषा, उसके विशिष्ट लेखन, प्रयुक्ति, प्रयोग, अनुवाद आदि से भलीभाँति परिचित हों, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मीडिया और अनुवाद विषयक जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है।

इकाई - 1 मीडिया लेखन - विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप : मुद्रण, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य, इंटरनेट; श्रव्य माध्यम : रेडियो

मौखिक भाषा की प्रकृति, समाचार लेखन एवं वाचन, रेडियो नाटक, उद्घोषणा लेखन; दृश्य-श्रव्य माध्यम : फिल्म, टेलीविजन, वीडियो; फीचर और रिपोर्ताज

इकाई - 2 विज्ञापन लेखन - विज्ञापन शब्द और उसका अर्थ, विज्ञापन की परिभाषा, विज्ञापन के प्रकार, विज्ञापन की भाषा, विज्ञापन के गुण

इकाई - 3 अनुवाद का स्वरूप- क्षेत्र, प्रक्रिया और प्रविधि - अनुवाद का स्वरूप, अनुवाद का क्षेत्र, अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि

इकाई - 4 अनुवाद के प्रकार - कार्यालयी हिंदी और अनुवाद, जनसंचार माध्यमों का अनुवाद, विज्ञापन में अनुवाद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में अनुवाद, बैंक, विधि क्षेत्र में अनुवाद, साहित्यिक अनुवाद

इकाई - 5 सारानुवाद, दुभाषिया प्रविधि, अनुवाद मूल्यांकन - सारानुवाद, दुभाषिया प्रविधि, अनुवाद और पुनरीक्षण, और मूल्यांकन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. अनुवाद विज्ञान : स्वरूप और समस्याएँ, डॉ.राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
2. हिंदी में मीडिया लेखन और अनुवाद, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
3. पत्रकारिता प्रशिक्षण, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
4. अनुवाद विज्ञान, डॉ. राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद
5. अनुवाद के विविध परिप्रेक्ष्य, डॉ. राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद
6. जनसंचार माध्यम और अनुवाद, डॉ. राम गोपाल सिंह,विनय प्रकाशन, अहमदाबाद
7. प्रयोजनमूलक भाषा और अनुवाद, डॉ. राम गोपाल सिंह,पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
8. प्रयोगात्मक और प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. रामप्रकाश गुप्त तथा अन्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. कमलेश्वर भट्ट तथा अन्य, शारदा प्रकाशन, दिल्ली
10. व्यावहारिक हिंदी, डॉ. सुनील जोगी, आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली
11. प्रयोजनमूलक, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
12. हिंदी कंप्यूटिंग,डॉ. राम गोपाल सिंह

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-4

CC - HIN. -404 भारतीय साहित्य -2

भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्थान अन्य प्रान्तीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए हिन्दी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूप रचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिन्दी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है तभी उनके ज्ञान क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण का विकास भी होगा।

इकाई -1 1.1 उपन्यास, कविता एवं नाटक : स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य : विभिन्न विधाएँ : एक विहंगावलोकन(स्वातंत्र्योत्तरकालीन उपन्यास, कविता एवं नाटक विशेष संदर्भ में, भारतीय मूल्य एवं अनूदित कृतियाँ, अनुवाद की महत्ता)

इकाई -2 2.1 महाश्वेता देवी और उनका 'अग्निगर्भ': लेखिका का परिचय, अग्निगर्भ का कथ्य और शिल्प, अग्निगर्भ की औपन्यासिक विशेषताएँ- नक्सलवादी आंदोलन - मिथकीय आधार, प्रतीकात्मक पात्र, भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति, लेखिका का जीवन दर्शन, उपन्यास के आधार पर साहित्यिक समीक्षा

इकाई -3 3.1 पाश और उनका काव्य- 'बीच का रास्ता नहीं होता', कवि पाश और उनकी युगीन परिस्थितियाँ, पाश की कविताओं का मुख्य स्तर, रस और शिल्प विधान(काव्य सौंदर्य) 1. लोहकथा, 2. उडडदे बाजा मगर, और 3. साडे समयविच

'बीच का रास्ता नहीं होता' के माध्यम से पंजाबी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

इकाई -4 4.1 विजय तेंदुलकर और घासीराम कोतवाल, सफल नाटककार के रूप में तेंदुलकर का परिचय, घासीराम कोतवाल का कथ्य और शिल्प, नाटक में ऐतिहासिकता, नुक्कड़ नाटक : स्वरूप और व्याख्या, नुक्कड़ नाटक के रूप में घासीराम की समीक्षा, घासीराम के माध्यम से तेंदुलकर के भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

इकाई -5 5.1 टिप्पणियाँ :

अग्निगर्भ (उपन्यास), बीच का रास्ता नहीं होता (काव्य-संग्रह) तथा घासीराम कोतवाल में से।

संदर्भ ग्रंथ

1. तुलनात्मक साहित्य : सिद्धांत और समीक्षा, सं.महावीर सिंह चौहान, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
2. भारतीय साहित्य की अवधारणा और रघुवीर का सृजन, सं.आलोक गुप्त, रंगद्वार प्रकाशन, माणसा
3. भारतीय नवलकथा, डॉ. रमणलाल जोशी, युनि. ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद
4. हिन्दी और गुजराती कविता में राष्ट्रीय अस्मिता : एक तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. एस.पी.शर्मा, शांति प्रकाशन, रोहतक
5. विश्व की भाषाओं का वर्गीकरण, डॉ. राम गोपाल सिंह, विनय प्रकाशन, अहमदाबाद
6. भारतीय भाषाएँ, कैलाशचंद्र भाटिया
7. हिन्दी भाषा, डॉ. भोलानाथ तिवारी
8. बंगला साहित्य का इतिहास
9. हिंदी भाषा, डॉ. हरदेव बाहरी
10. हिंदी साहित्य संक्षिप्त इतिहास, नंददुलारी बाजपेयी
11. घारीराम कोतवाल, विजय तेंदुलकर
12. अग्निगर्भ, महाश्वेता देवी
13. बीच का रास्ता नहीं होता, पाश

एम.ए. (अनुस्नातक) हिन्दी, सेमेस्टर-4

CC-HIN - 405. नाटक और रंगमंच

उद्देश्य :

नाटक साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। यह श्रव्य एवं दृश्य दोनों रूपों को समेटे हुए है। नाटक प्रत्यक्ष कल्पना एवं अध्यवसाय का विषय बन सत्य तथा कल्पना से समन्वित विलक्षण रूप धारण करके दृष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन के साथ-साथ समाज-निर्माण एवं परिवर्तन की चेतना प्रदान करते हुए अपने साध्य में दृश्य होने के कारण सीधे रंगमंच से जुड़ा हुआ है जिसे विविध काव्य के अतिरिक्त ललित कलाएँ तथा कलाकार मिलकर आकार देते हैं। इसमें नाटककार, अभिनेता, संगीत, दृश्य-विधान, वेशभूषाकार आदि सभी का रचनात्मक सहयोग होता है। जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं, उसकी विशिष्ट ऐतिहासिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक विशेषताओं की व्यापक समझदारी के लिए इस सशक्त माध्यम का अध्ययन छात्रों के लिए अनिवार्य है क्योंकि इससे उनमें जीवन के विविध पहलुओं की सामाजिक समझ विकसित होगी जिससे वे अपने भावी जीवन को साहित्यिक अनुभवों की आँच पर परिपक्व करके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समझदारी के साथ प्रवृत्त होंगे तथा सफलता उनका पथ प्रशस्त करेगी।

इकाई – **1** हिंदी नाटक

1.1 नाटक : स्वरूप एवं विकास

1.2 नाटक : विधागत वैशिष्ट्य

1.3 नाटक और रंगमंच का संबंध

1.4 अजात शत्रु – जयशंकर प्रसाद

इकाई – **2** नाट्य कला

2.1 भारतीय रूपक

2.2 पारंपरिक नाट्य रूप - रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी, माच, ख्याल, विदेसिया

2.3 लहरों के राजहंस – मोहन राकेश

इकाई – **3** भारतीय एवं पाश्चात्य रंगचिंतक

3.1 विश्व के प्रमुख रंगचिंतक - भरत, स्तानिस्लाव्सकी, ब्रेख्त

3.2 कोमल गांधार – डॉ. शंकर शेष

इकाई – **4** हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास

4.1 भारतेन्दु युगीन नाटक

4.2 द्विवेदी युगीन नाटक

4.3 प्रसाद युगीन नाटक

4.4 प्रसादोत्तर युगीन नाटक

4.5 स्वातन्त्र्योत्तर युगीन नाटक

4.6 एक सत्य हरिश्चन्द्र – डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

इकाई – **5** रंगमंच (व्यावसायिक और अव्यावसायिक)

5.1 पारसी थियेटर और रंगमंच

5.2 इप्टा तथा अन्य प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ

5.3 नुक्कड़ नाटक

5.4 अंधायुग – धर्मवीर भारती

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. भरत और भारतीय नाट्य कला, सुरेन्द्र नाथ दीक्षित
2. भारतीय नाट्य परंपरा और रंगभूमि, डॉ. मदन मोहन भारद्वाज
3. हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन, डॉ. शांति गोपाल पुरोहित
4. आधुनिक हिन्दी नाटक संवेदना और रंगशिल्प के नये आयाम, डॉ. सु. कथूरिया
5. रंगधर्म : प्रकृति और प्रतिमान, चन्द्र शेखर
6. हिन्दी नाटक और रंगमंच, डॉ. सुरेश वशिष्ठ
7. हिन्दी नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव, डॉ. श्रीपति शर्मा
8. हमारी नाट्य परंपरा, श्री कृष्णदास
9. हिन्दी रंगमंच के संदर्भ में नाट्य समीक्षा, डॉ. विश्वनाथ शर्मा
10. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास, दशरथ ओझा
11. हिन्दी नाटक और रंगमंच, जगदीश गुप्त
12. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, नेमिचन्द्र जैन
13. आधुनिक हिन्दी नाट्यालोचन : नई भूमिका, नरनारायण राय
14. हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास, डॉ. सोमनाथ गुप्त
15. हिन्दी नाटक : सिद्धान्त और विवेचन, डॉ. गिरीश रस्तोगी
16. रंगमंच कला और दृष्टि, गोविंद चातक
17. पारसी रंगमंच, डॉ. सनत कुमार
18. पारसी रंगमंच और खयाल परंपरा, डॉ. नवनीत चौहान
19. समकालीन हिन्दी नाटक : चरित्र सृष्टि, जयदेव तनेजा
20. डॉ. शंकर शेष : आधुनिक हिन्दी के प्रतिनिधि नाटककार, डॉ.शामली एम.
21. जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश के नाटकों में संवाद योजना, डॉ.एम.शान्तम्मा
22. स्वातंत्र्योतर हिन्दी नाटकों में मंचीयता, डॉ. वासंती साळवेकर
23. साठोत्तर हिन्दी नाटक, डॉ. नीलम राठी
24. हिन्दी नाटक और मिथक, डॉ.मगन विक्रम और श्रीमती किरन परनामी